हज़रत इमाम जैनुलआबिदीन (अ०)

आयतुल्लाह सै0 मुहम्मद हुसैन तबातबाई
अनुवादक : काज़िम महदी नगरौरी

हज़रत इमाम सज्जाद (अली इब्नुल हुसैन, लक़ब ज़ैनुलआबिदीन व सज्जाद अ0) तीसरे इमाम हज़रत हुसैन (अ0) और उनकी बीवी हज़रत शहरबानो के बेटे थे। जो ईरान के हाकिम यज़्दजुर्द की बेटी थीं। आप अपने तमाम भाईयों में हज़रत इमामे हुसैन (अ0) के अकेले बेटे थे जो ज़िन्दा बच रहे थे जबकि आपके बाक़ी तीन भाई पच्चीस साला हज़रत अली अकबर, पाँच साला हज़रत जाफ़र और दूधपीते हज़रत अली असग़र (अ0) कर्बला के वाक़ेए के दौरान शहीद कर दिए गए थे।

(मक़ातिलुत्तालिबीन पेज–52 व 59)

इस सफ़र में आप भी अपने बुज़ुर्ग बाप के साथ थे जो तक़दीर के लिखे के तौर पर कर्बला में ख़त्म हुआ लेकिन अपनी सख़्त बीमारी और हथियार उठाने के ताक़त न होने या जंग में न शरीक होने की वजह से आपको जिहाद में हिस्सा लेने और शहीद होने से रोक दिया गया था इसलिए आप हरमे इमाम के क़ाफ़ले के साथ दमिश्क़ रवाना कर दिए गए थे जहाँ कुछ दिनों तक क़ैद व बन्द की तकलीफें उठाने के बाद आपको इज़्ज़त और शान के साथ मदीने भेज दिया गया था। क्योंकि यज़ीद इससे आम लोगों की तरफदारी हासिल करना चाहता था। लेकिन उमवी ख़लीफा अब्दुलमलिक के हुक्म से आपको दोबारा गिरफ्तार करके मदीने से दमिश्क़ और फिर वहाँ से वापस मदीने ले जाया गया।

(तज़किरतुल ख़वास पेज–324)

मदीने की वापसी पर इमामे चहारुम पूरी तरह से आम ज़िन्दगी से अलग हो गए। अपना दरवाज़ा ना जानने वालों के लिए बन्द कर दिया और अपना सारा वक़्त ख़ुदा की इबादत में गुज़ार दिया। आप से सिर्फ अबुहमज़ा और अबुख़ालिद काबुली जैसे शीओं के कुछ ख़ास लोगों ने राब्ता क़ाएम रखा था और यह हज़रात वह फ़िक़्ह के उलूम शीओं को बताते थे जो इमाम उन्हें समझाते थे। इस तरह शीईयत ख़ूब फैली और पाँचवें इमाम की इमामत के दौरान उसने अपना असर दिखाया। इमाम ज़ैनुलआबिदीन की किताबों में ''सहीफ़–ए–सज्जादिया'' बहुत ही अहम है जिसमें बड़े ऊँचे इलाही उलूम के बारे में 57 दुआएँ शामिल हैं और यह किताब ''ज़ुबूरे आले मुहम्मद (स0)'' के नाम से मशहूर है।

कुछ शीओं की रिवायतों के हिसाब से उमवी ख़लीफा हिशाम बिन अब्दुलमलिक की तहरीक पर वलीद बिन अब्दुलमलिक के ज़रिए ज़हर दिए जाने से इमामे चहारुम का इन्तिक़ाल अपनी इमामत के पैंतीस साल बाद 95 हि0 (मुताबिक़ 712 ई0) में हुआ।

(मनाक़िब इब्ने शहरे आशोब जिल्द–4 पेज–176)